

DPN 6713

Title :

सुग्धरास्तोत्र / SRAG DHARASTOTRA

Run. No. 7439

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 23.5 X 7.8

Folios 10

Lines (in a page) 5/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor हर्षमुनि वज्राचार्य / फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS 971

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति श्री आर्यताराभट्टारिकाया सुग्धरास्तोत्रं समाप्तं ॥
सुग सम्बत् ८७१ मि पौष कृष्णया नमोभि पूनु चोय सिधयका लेषितं मणिसंरा -
महाव्याहारे अंतले क्षेत्रा वज्राचार्य ह (र्षमु) निनं चोया...

१८ नमः आर्यनायकः॥

ववसूवशिष्यः ग्वावूवू
वाग्नः नमिचिलवूचि
ग्यापादोन वार्यः कव
कुमानाः स्त्राविन्यापत्त

१०२ स्तब्धरा स्तोत्र

वालाकालाकन्तामुः
जामविशीसंपत्संपद
नाः वरूकव्यकृत्कि॥
पूटमूकटाः कोपहृत्त
वत्थः नडानूतिहूम
फराणिन्दुरांत वजाचार्य

१॥ अग्रीवराचयामि ॥ १ ॥ इत्येवः खवको विनिपतित न नूदरगः कानि
गीकः कीकिमूट क वासि न्यसक न विरुता न म् वे धष्ट रिंन ॥ अत्वाहय
पत्रयः कतनयनः ॥ ३ ॥ आमि व आर्क ल श्री मा लो का आनिवर्द्ध पत्रगति
गमनस्वाशयपापहृति ॥ २ ॥ सर्वस्मी सत्वमाग न नूत आक व र्मा निवि
रशष्यवृत्ता न मध्वर्तु ग्रह न य ह र म्पगत मा ह आश्याप्य व उध ॥ सामर्थ्य ॥ धावा

दियग सकलजगदय धावा न गिमा गुविर्म्यदः ख वा ह न थ वि प्र न प न दिग
दी ॥ ३ ॥ कर्तु इ विदग्ध ॥ ३ ॥ धिग्धिमांम न ता हं दिवग क ल नू वा प्राप
नू कां ध का र्वा न य न कूल के क हिम स क ल गी वा आ न र हे म व र्मा बल
द्विपप्रता ल्या विपुल म रिगूहा हृ ह ग र्ह द विड ना थि क न्याप्य ना थ र्मा
गवगिरवति सर्वलोके क धा गी ॥ ४ ॥ मातापि र्म न्य ह ना वि नू व नि
व ह्म स ख द मा या नि पू जे का धं ध ह पिता यि पु ति दिव स म स पार्थ ना

15

शर्ग ॥
२

सुप्रयुक्तः ॥ त्वत्तुल्यलोकावाचा विपुलमूनिग्रहा कल्पयद्वायवस्त्रि सर्वलोकाः स्थितिना
 र्था न्यीसु रुमिनचन विक्रियाया उकाचिन् ॥ ७ ॥ योयः के मोघवक्रि कालिन
 ननूहं तावतिनस्यपध त्यासापहं प्रगिहं कलमयिसरु लाइः स्वयानाव
 मग्ने ॥ वेदनायावदन पवृषपविहवा प्राणीत्तुइः स्ववेगस्यक्कं वृद्धयान
 पुनिधि कृत्तधिया तावदेवान्कम्पा ॥ ८ ॥ त्वत्वेनूह वाहानदगिन्मिपदः
 व्याजमाका ननाद नाहं त्या न्यायपक्षी जननीजनयीतु किं पुनयादगीत्य ॥ ध्या ॥

२

10

5

॥ त्वत्तुप र्धपयषामहिमनविहवा प्राथनाप्राफ कामा दश्मश्चनहरीसु
 चमवक्रिनुवा इमनका नकलन ॥ ९ ॥ पापियचस्मिकस्मा त्वेयिमममह
 ति वन्दन हकि लखा शृणास्म त्यां वनाम्मा पपहवसिहभा मापमकालम
 व ॥ त्वत्क क व्यापा नहावा त्वदसिमयिकथ कथना कथकथ पधगु
 नमन्नीषात्यपिवीपूत्रकयकिं तिषः अत्रधिति ॥ १० ॥ मायामासः
 र्यमान प्रहृतिहिरधमे सुत्यकालं कुमाच स्वदाष वाक्छं मानामथ

0

CMTS.

5

10

15

20

25

॥ गग ॥

२

कलहः स्व नकसा धावतन्मा ॥ यथा गगदा ऊरुजा ऊनसपिन वरु यरुदर्थ
विषाया कार्यो धदिनी ऊरुपवचन नास्याममावच्छं कामा ॥ २ ॥ कल्या
नो जा नवा न उमि न जल चल लाल कल्लो लहला सुजी एा किफ वला
टग विकट उट सुहाट माय हहासा ॥ मर्ज हि हि न नो के सक वरा वदिना
फान निर्य दम नो स्वच्छ नद वी र्म धे स्व नद वि नृ ति प रे स्त्री व म ति य न
वे ॥ १० ॥ धूम शाना गगदा गवगन नगट हा सुग वरु सु विग सुज हा ॥ धा

३

लाक बाल हलन जव विग हगम वि आ न गगया ॥ स्वया वद्व प्र लामां जलि
पूट मफूटा गंगदा किग या हा प्राथी विद्य विलासा हल जल द जले ना हि
य न ऊनेन ॥ ११ ॥ दाना रिपूर्या माना तय कट कट काली विला ववमा
ला हू कालो हूय माना गति गज निग धेषु व के वियस ॥ दना का उग
दोला गव उलिग नर स्वाम नृ स्मि ताम्भ पृष्ठा वेष्टु प्र हू ष्टु पृष्ठा रव
मीव काटिका टप विष्ट ॥ १२ ॥ पौदपा जो पहावी पृहगन वसिवाधू

15

॥ भग ॥

४

५५

लवत्युत्पत्त्यां गूण्याम व्याक वायु ग्रहविल पलदसि स्फुटक स्फुटदयो ॥ दस्यदा
 स्यनियुक्ते सरु कृटि कृटिल रुक गो कुडिना काचिना वरव्या न्यखिं न स्फुटवि
 रिणपदं नाम धाम सिया नो ॥ १३ ॥ वज्रक वपुहा वपुष वपुल वरवा रवातम
 रुमृकं रु (धमगसा झसु धोम स्फुटविकनस मकट स्फु धेसीपि ॥ कृष्ण वापि
 सूवा वा इय विमृग विपुलि कृष्णं कृष्ण नास्य वस्य ना दृग यो गि त्वं इलित वचिना
 स्फुटदर्थवार्ध ॥ १४ ॥ धूमावर्हा धका वा कृटविकट रुसि स्फु वस्फु ल्का व

धना

10

५४

एव व्यापा व व्याफ व कुा स्फु व द वृमना वज्र की ना मया रडो ॥ पापात्स रुया रुय
 रुवर्ग रग रना मत्य र स्त्वय बी स्मा ध रुम रुलि मा ला वलय कृ वलय मु ग्वी
 रुषां विरुति ॥ १५ ॥ एव वृह दतिन मय कट कतना कि रु इट पिष्ट कृ ग
 वच द्वा वाट वेदा न्कट वटि टक इयु र्धिया सो वं गृधः ॥ कृत ज माष्ट क धू
 म्यु गि स गय दि व्याप द ना इ व ना यो वा र्था दार्थ ना वा व व र स व र ना म्मि
 स्त्रि गध व धु कि ना पि ॥ १६ ॥ माया नि मा र क र्म कृत क र्म वी कृ ना न क

0

CMTS.

5

10

15

20

25

15

॥ गग ॥

ॐ

मध्यमिष्ठा. वृषा वंशान्न वृषं पुरुचराकि रा. उम्व वाजाम्वाली ॥ त्वह न्यादाय
 म-नुस्म गिरुत इलित. स्या वेहं त्य. पुध प्यो पुन प्रोता गवदि नीचथ वित्र विगी सी
 श्रीव जा सित्र जी ॥ १० ॥ ग किं मृगमर्हि. तिमदमदनदि. वंछ धा बाध का नो वि
 य धा नायमान पुता कि वरा. निष्ठा ग द्वा नवर्वे. य ह म-गुम काले पुवल उऊः
 वने विद्विष दि दि विद्विः त्वेद-नात्सा रूप हिः पुम गुम वम हा. मक वी वयी नीष्टिः
 ॥ १८ ॥ पापा वा नान् वेहो. दृट गद विगत्र. प्रणिपू त्यास विगु त्व गमां मासफ
 नाति. मषक ह च च व. ज-नु ऊग्व ऊ ना हा ॥ य प्य सा क्षाप स्य वा गद व वर लि ॥ धा वा ॥

ॐ

१०

५

का. व्यास रुकि प्र ग का जाय न जात वृष प्र मिनी धिवयूष प्र पुत्रिका य गा ऊ
 ॥ १२ ॥ विगम-ने उम उया उग व वि व प हि गी य स्य नां माय से व्य वि द्वां ग भ द्वि
 वृय भ-गु ग धन विर्व हा म क ग्या म ल्य मरुः ॥ स वा वे काल रु के विरु व म म
 दि न प्राप्य वा गि भ्व त्वे सा यि गो रु कि रा का रु व ति न्द य मरु. वा दि मिः
 हा स नानि ॥ २० ॥ रू स या धि वि धर्म रू टि न के टि ग टि के पी टो. द्या वि
 नां ग म. य का यं रि प्य पि स पत्र पत्र पत्र ग. क र्या लि ग प्ये ट म थ ॥ त्वाम

0

CMTS.

5

10

15

20

25

॥ गग ॥

लाक्षाध्ववर्धं वलयवर्धनिवहू चामलस्रवचावी मूर्वी ध्विपद ज द्विपद
नयनामर्द्धे प्रागजन्मोपाठयुधाय विगशूत रु ले विगमप्रापुव नः ॥ देवा
गिकामनात्वा कृपनऊ न ऊन न्यथमिथ्यथेहया मम निवाने चासि क
नीकवनीधिनीहनाः प्रापुवन्ती ॥ २२ ॥ द हि ह द विलकः ऊननीवस
नया तायायाहस्यमाना दूनादात्मं वित्यास्य ऊनमृगसुहृद धूर्तिवध
मानः ॥ स्याद्विश्वदः खड्गगध्वमखाखवागसीमना गहानोमी ॥ धावा ॥

स्यान्तःपुत्रस्त्रीबलयमनमना जातनिद्रापवीधः ॥ २३ ॥ चकंदिक्र
रविर्वरुवद्वकिवत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल ऊत्तल
वृत्तिवर्धमशमीव वाग्ध ॥ तास्यहास्यमयुखामपीलमवगुणः काषरु
शुकाषः सनानीवीवसेन्यातवतिरुगवमित्युसादीगि वगहन ॥ २४ ॥
स्येह न्यध्वनामः सुवर्हिमसि सिलादहमं कनकानः कानोकीज
नूनागहि नवविचिनीतीर्थनत्वापवावः ॥ त्वदिशालवृत्तिर्मल

15

॥ ५॥

॥

यमनूतनयागि विद्याधरः खः प्राशुः प्रामपि नान्नगः उज्जयविद्यः प्रालसः स्यावि
 दार्यः ॥ २५ ॥ हावा फाना नानाः श्रवणः कवलयस्य र्द्धमानाय नाशमन्यो नोदा
 वनिमवृष्टय विमलामादमाधिदिल्लः ॥ काचीनादोनवः ॥ २६ ॥ वत्त
 मंजी नरुय्याः स्वार्थः प्रार्थय नमस्व मदमदिताः सादवादवकं न्या ॥ २७ ॥ वत्त
 वृत्ताना न वापिकनक कमलिनी वज्र किं जल्ये माला मन्मडुत्पावि जात दुममध्व
 मध्वदूतध्व विविगानी ॥ विनावे धू प्रवीणमवपुत्र प्रमदीदहमाध्वर्य ह्यो कः
 स्वायूष्मसपर्यमनूतवगिचिन्न नन्दनोद्यानपाणी ॥ २८ ॥ कवपूरेलाल

॥

॥

20

25

वंगत्तदग्ननवद हादगः ॥ २९ ॥ दकायां का नाकन्दर्यदर्यो नूट कचकुरुला
 वरु विग्रनवीर्यो नोस्त्रो लवेला वरु नोस्त्रो लवेला वरु नोस्त्रो लवेला वरु नोस्त्रो लवेला
 लोणे ॥ ३० ॥ मन्दाकिन्याममन्द कुरुमलिलसवित्री उयासुन्दरीतिः कोद नित्यदुःखान
 : कवराय विनागो रुक्मपुष्परावाः ॥ ३१ ॥ गीर्वाणग्रामदीति विनयवृत्तनं ममीवि
 तिर्वदिगारुः स्वर्गसल्लाधिपः सुवक विरिजरादुषः ॥ ३२ ॥ हाशिगांग गगया
 दादामदी लाचिबलवयिका दामवोमां चमर्हिः पूगस्त्रदृष्टियागे ववनि सु
 महीही वनित्रपकाष्टः ॥ ३३ ॥ वृत्तावलावर्गसासनगगसुगगव्यामलक्षि

0

CMTS.

5

10

15

20

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

१०
१०

सर्गधारा स्तोत्र

महर्षिभिरुक्तं वज्राम्बु

१०

धारा